श्रीजैनबद्रीमूलबद्रीक्षेत्र।

की यात्रा के समाचार।

अर्थात्।

श्रीयुत पूज्यवर बाबा सुखदेव जी उदासीन
श्रावकव्रती भरतपुर निवासी अवलोकित
जैनधर्म्म सम्बन्धी उत्तम समाचार।

दूसरी बार।

पण्डित जीयालाल चौधरी जैनप्रकाश पत्र
संपादक वा मालिक दफ्तर जैनप्रकाश कस्बः
फर्रुखनगर जिला गुड़गांवः ने लिखा।

By

C. M. P. J. JIA LAL MANAGER

JAIN PRAKASH & JIA LAL PRAKASH NEWS-PAPERS.

FURRUKH-NACAR DISTRICT CURCAON PUNJAB.

भारतजीवन प्रेस बनारस

१८८५ ई०।

दूसरी बार १०००]   [मूल्य डाक व्यय सहित ।)॥

श्रीगणपतयेनमः ॥

दयावंत की जक्त में पत राखे भगवंत ॥
सदा जैन चित मे रहो शुद्ध दयामय पंथ ॥१॥

भूमिका ॥

प्रथम हम परमात्मा परमेश्वर को बारम्बार समर्पण कर के एक ऐसा समाचार प्रकट करते हैं जो जैनी गणों को परमलाभकारी होगा अर्थात् "जैनबद्री" "मूलबद्री" धर्मक्षेत्र का नाम ऐसा कौन जैनी है जो जानता न होय वा उक्त क्षेत्रों का यात्राभिलाषी न होय परंतु समय के हेर फेर और मार्ग के अबोध से कठिनता हो रही थी, यह परम आनंद का विषय है कि सम्वत् १९३२ के शीत काल में पूज्यवर बाबा सुखदेव जी का उपदेश पाय: कितने जैनी फर्रुखनगर रिवाड़ी फीरोजपुरादि के एकत्र होय हर्षयुक्त यात्रा को पधारे, फिर आनंद पूर्वक जब लौट कर आये तो बाबा जी महाशय की आज्ञानुसार यह समाचार जैनी लोगों के उपकारार्थ मुद्रित कराये गये थे जिस में लेखक ने अनेक अशुद्धियां कर दई थीं अब समय बस इस के पुनः छपने का अवसर भया तो "मेरे परम मित्र बाबू रामकृष्ण जी वर्म्मा "भारतजीवन" यंत्रालय के अध्यक्ष श्री काशीविश्वनाथ पुरी निवासी ने इस की अशुद्धियां मिटाने में मेरी यथाशक्ति सहायता करी मैं इस का उपकार मान धन्यवाद देता हूं। वास्तव में यह कामलोकोपकारक भया है ॥

चौधरी जीयालाल सम्पादक
जैनप्रकाश वा जीयालालप्रकाश
फर्रुखनगर ज़िला गुड़गांवा

श्रीजैनबद्रीमूलबद्रीक्षेत्र ।

प्रथम फर्रुखनगर जिला गुड़गाँवाँ का वर्णन करते हैं ।

जो जो जैनी गण आचार्य उद्यमी भये थे
अपने २ गृह से चल श्री बाबा सुखदेव जी के
निकट पधारे फिर उक्त बाबा जी के संग फर्रु-
खनगर के जैन मन्दिर में पहुंचे । यह फर्रुखनगर
छोटा सा क़सबा है अनुमान आठ या नौ सहस्र
मनुष्य इस नगर में निवास करते हैं, यहां के
चारों ओर पक्का कोट अर्थात् क़िला बना हुवा है,
बाज़ार में पक्की सड़क लालटैन आदि म्यूनिसिपल
कमेटी का प्रबन्ध है, अग्रवाल जैनियों के गृह
अनुमान डेढ़ शतक १५० और एक जैसवाल, शेष
ब्राह्मण वैष्णव यवन आदि जाति हैं, जैन मंदिर
शिखरबन्द एक है सो महामनोग्य अति सुन्दर
है जिस में प्रतिमा अधिक और शोभायमान हैं,

एक प्रतिमा ऐसी प्राचीन है कि केवल संवत् ४४ में उस की प्रतिष्ठा हुई है अतिशय युक्त है जो शीतलनाथ महाराज की है, नित्य प्रति पूजन पाठ शास्त्रोपदेश होय है, सो सकल यात्री लोग मन्दिर के दर्शन कर रेल पर पधारे और गढ़ी, हसंरू, जाटोली, खलीलपुर, रिवाड़ी, बावल, अजेरा का खैरथल, बरबारा, अलवर, मालाखेड़ा होते हुवे राजगढ़ पहुंचे यहाँ पाँच मन्दिर शिखरबन्द महा मनोग्य हैं, और एक मन्दिर जी नगर के बाहर उत्तर की ओर महामनोग्य है जहाँ नित्यप्रति पूजन होय है कसवा, बाँदीकुई, रायपुरा, बिवाई, मंडावर, घोसराना, खेरली, नदबई, हेलक, भरतपुर, इकारनु, अचनेरा, बिचपुरी, आगरा, टूंड़ला होय, फ़िरोजाबाद, शहर में पहुंचे मार्ग में अलवर के मन्दिर जी ७ के दर्शन किये और भी मार्ग में दर्शनालाभ होता रहा, फ़िरोजाबाद में आठ मंदिर दिगम्बर आमनाय के हैं, और जैन धर्म्म की विशेष चर्चा

है, यहां अग्रवाल वैष्णव और छीपी यह दो प्र-
कार के जैनी हैं, एक बड़ा मन्द्रि श्री चंदा प्रभु
भगवान का है जिस में एक हाथ ऊंची फट-
कमई चन्दा प्रभु भगवान की मूर्त्ति अति सुन्दर
चौथे काल की है जिस के दरशन कर अति
आनन्द प्राप्ति हुवा वहां से हम रेल में सवार
हो कर जब्बलपुर शहर में पहुंचे उस शहर में
तेतीस मन्द्रि ३३ दिगम्बर आमनाय के अति
मनोग्य हैं तिन में मूर्त्तियों का समूह विशेष है
जिन की प्रशंसा लिखवे कूं लेखनी की सामर्थ
नहीं है ॥ और इसी शहर से ५ पांच कोस द-
क्षिण की ओर पन्नागिरी नामा नगर है तहाँ
सोलह १६ मन्द्रि दिगम्बरियों के हैं जिन में
मूर्त्ति महारमणीक अरु अतिशयवान बिराजमान
हैं जिन की स्तुति इन्द्रादिक देवन कर न होय ॥
बहुर उन का समूह भी अधिक है ॥ जब्बलपुर
से उत्तर की ओर गढ़ा गाम नाम एक ग्राम है
जिस में दो मन्द्रि जी अति शोभायमान हैं

जिन में मूर्त्ति जी महा मनोग्य चतुर्थ काल की समूह सहित विराजमान हैं इस ग्राम से निकट ही एक पर्वत है तापर एक मन्दिर जी किसी पिसनहारी ने बनाया है इस मन्दिर जी में भी मूर्त्ति बहुत सुन्दर हैं॥ यहां तें भुशावर होते हुये नागपुर नगर में पहुंचे यह शहर बड़ा बहुत है इस जगह चौदह मन्दिर महामनोज्ञ हैं॥ इन में मूर्त्ति भी महा मनोज्ञ हैं॥ अपने सा धर्म्मी जैनी भाईन के घर इस शहर में पांच सौ हैं॥ यहाँ ते हम गाड़ी भाड़ कर के अठारह कोस एक रामटेक नाम नगर में पहुंचे यहां आठ मन्दिर जी पर्वत के नीचे उजाड़ में शिषरबन्द हैं तिन विषय एक मन्दिर जी शान्तनाथ महाराज का है जिस में मूर्त्ति जी एक श्री शांतनाथ की दस हाथ ऊंची महा मनोज्ञ अतिशयवान है चौथे काल कीसी दीखे है॥ रामटेक विषे एक कामठी नाम नगर है सो अति विख्यात है तामैं एक मन्दिर जी महा मनोज्ञ है यहां तैं

दरशन कर उलटे फिर गाड़ी में बैठ नाग पुर आये तहां तें रेल में सवार होकर अड़सठ ६८ मील अमरावती नगरी पहुंचे जहां चार मन्द्रि जी शिखरबन्द अरु अनेक चैत्याले हैं सो एक मन्द्रि जी में मूर्ति या भांति हैं कि फटक मई १८ मूंगे की एक स्वर्ण की एक चांदी की दो और धात पाषाण की अनेक हैं सो मूर्ति एक से एक सुन्दर हैं और यह नगर भी बहुत बड़ा है ॥ यहां से हम गाड़ी में सवार हो कर मार्ग में जोजिन धाम आये उन की यात्रा करते हुये श्री मुक्तागिर जी पहुंचे यह क्षेत्र अर्थात् यह स्थान महा उत्कृष्ट है यहां छब्बीस २६ मन्द्रि जी है तहां एक मन्द्रि जी के तहखाने अर्थात् पाताल विषें दो मूर्ति चार २ हाथ ऊंची योग्य खड़े बिराजमान हैं सो महा मनोज्ञ अतिशयवान चौथे काल कीसी हैं ॥ इस स्थान से साढ़े तीन कोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं इस क्षेत्र की महिमा कित लौ वर्णन करिये दरशन

कर के अति आनंद हुआ फेर हम एलचपुर नगर में आये इस नगर में छः ६ मन्दिर जी बड़े हैं और चैत्याले भी हैं दरशन कर के चले सो ग्यारह कोस ११ पर एक भातकुली नाम ग्राम है तहां एक मन्दिर जी अति शोभायमान हैं जिस में मूर्ति श्री आदनाथ भगवान जी अति मनोज्ञ हैं सो चौथे काल की है अतिशय युक्त है ता करि दूर दूर के मनुष्य यात्रा कूं आवै हैं। और बोला कबूला भेट चढ़ावें हैं हम दरसन कर के गाड़ी में सवार हो कर सतरह कोस १७ कारंजे जी आये तहां मन्दिर जी तीन ३ और चैत्याले तीन सौ ३०० हैं और यह ग्राम भी बहुत बड़ा और प्राचीन है ऊपर वर्णन किये जो तीन मन्दिर तिन में एक मन्दिर जी काष्टा सङ्घियों का है तामें अनेक भाँति की सुन्दर मूर्तियों का समूह है अर्थात् फटक की इक्कीस २१ चांदी की चार स्वर्ण की एक अरु तीन अंगुल

ऊंची एक हीरे की है एक मूंगे की पांच उं-
गल ऊंची है ऐसी ही एक पन्ने की है अरु ग-
रुड़ मणि रत्न की चार हैं या भांति हैं और
धात पाषाण की असंख्य हैं ये सब चौथे काल
की हैं ॥ इनके उपरांत तीन सहस्र कूट चैत्याले
तीन तीन हाथ लंबे चौड़े पांच तथा साढ़े
पांच हाथ ऊंचे असे देदीप्यमान हैं मानूं मन्द्रि
जी ही है एक हजार आठ मूर्ति जी महा
मनोज्ञ हैं वे मन्द्रि जी अमोलक हैं अरु मूर्ति
जी के साथ सांचे में ढाल कर बनाई हैं। यहां
से चल कर हम गाड़ी की सवारी वीस कोस
अंतरिक्ष पार्श्वनाथ जी गये यहां मन्द्रि जी एक
श्रीपार्श्वनाथ जी का है तामें मूर्ति एक श्रीपार्श्व-
नाथ भगवान की है डेड़ हाथ ऊंची पद्मासन
पाषाण की है अतिशय कर एक अंगुल पृथ्वी से
अधर बिराजमान हैं या मन्द्रि से उपरांत प-
चास चैत्यालय या नगर में और हैं इन में भी
मूर्ति अतिशयवान हैं बोल कबूल वाले यात्री

बहुत आवे हैं। इस क्षेत्र में ग्राम ग्राम में जैनी लोगों के धाम हैं सो घर घर में चैत्याले हैं कदाचित् काहू के घर में, चैत्याला न होय तो आपस में उस के घर का कोई पानी नहीं पीवे है यातें धर्म को वधवारी बहुत है॥ यहां तें हम गाड़ी में सवार होय कर कोस उन्नीस १९ अकोला शहर आये जहां मन्दिर जी तीन और बीस चैत्याले हैं दरसन कर के बड़ा आनन्द हुआ यहां से रेल में बैठ कर एक सौ सत्तर मील मनमार नामा ग्राम पहुंचे वहां से गाड़ी किराये कर के कोस चौबीस श्री मांगीतुङ्गी जी पहुंचे यह मार्ग पहाड़ का है सड़क नहीं है॥ मार्ग में झाड़ी झूंखड़ बहुत हैं श्री मांगी तुंगी जी में पहाड़ के ऊपर दो मन्दिर जी हैं जिन के आगे जल के कुण्ड भरे हैं ये मन्दिर जी पहाड़ खोद कर बनाये हैं तथा मूर्त्ति भी पहाड़ ही में उकीर्ण हैं इस काल में ऐसे मन्दिर जी बनते नहीं इस पहाड़ के नीचे एक

मन्दिर जी सुध बुध का है कोई सुध बुध नाम राजा हुवा है उसने बनवाया है सो यह मन्दिर जी भी चुनाई का नहीं है पहाड़ खोद कर बनाया है और मूर्त्ति पहाड़ में उकीली हैं और पर्वत नीचे से एक है ऊपर चोटी दो हैं तातें ऐसे शोभायमान हैं मानो किसी ने घड़कर बनाया है। और दो मन्दिर जी पर्वत से और नीचे हैं तिन में मूर्त्ति बहुत मनोज्ञ हैं तिन के सम्बन्धी तीन धर्मशाला हैं तिन में जो हजारों यात्री आवें हैं सो विश्राम करे हैं॥ इस पर्वत की तीन परिक्रमा हैं सो बीच की परिक्रमा में एक गुफा है॥ वाकूं वहां के लोग पाताल कूं गई बतावें हैं॥ इस गिरवर से रामचन्द्र जी हनूमान जी इत्यादिक निन्यानवें कोड़ देवता मुनिमोक्ष पधारे हैं॥ सो यह महा अतिशयवान क्षेत्र है॥ यहां हम गाड़ी में सवार हो कर कोस पैंतालीस श्री गजपन्थ जी पहुंचे जहां से आठ कोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं॥ इस पर्वत पर दो

मन्दिर जो पहाड़ उकेर के बनाये हैं तथा मूर्ति जी बीच पहाड़ उकेर कर बनाई हैं॥ और पर्वत पर चढ़ने कूं पैड़ी बन रही हैं चढ़ाई पर्वत की एक कोस के अनुमान है॥ वहां से चल कर कोस दोय नासिक शहर आये यहां एक मन्दिर जी दिगम्बर आमनायका है और नगर भी पुराना है और बहुत बड़ा है॥ नासकसे रेल में सवार हो कर एक सौ अठसठ १६८ मील शहर बंबई आये यहां दिगम्बरी वा सितम्बरी दोनों आमनाय के मन्दिर हैं॥ एक बहुत बड़ा मन्दिर भाई सुभागचन्द्र का बनाया हुआ दिगम्बर आमनाय का है। बम्बई से रेल में बैठ कर सूरत आये यहां से बम्बई एक सौ सोलह मील है, इस शहर में छः मन्दिर जी और बाहर चैत्याले हैं तिन में मूर्त्ति महामनोज्ञ अरु अतिशयवान हैं। सूरत से चल कर पचपन मील शहर बड़ौदा पहुंचे यह नगर बहुत बड़ा है इस में मन्दिर जी एक चैत्याले दो दिगम्बर आमनाय के हैं॥ बड़ौदे

से गाड़ी भाड़े कर के पावागिरी पर्वत पर प-
हुंचे जहाँ से श्री रामचन्द्र जी महाराज के दो
पुत्रन कूं आदि दे पांच कोड़ मुनि मोक्ष पधारे
हैं यह पर्वत महामनोज्ञ है यहाँ दस मन्दिर जी
दिगम्बर आमनाय के हैं ॥ मूर्त्ति जी पहाड़ में
उकेरी बहुत हैं परन्तु काल दोष कर खण्डित
बहुत हैं मार्ग झाड़ी झूंखड़ का बहुत है। तथा
सिंह व्याघ्र आदिक बनचर भी हैं ॥ इस कारण
मार्ग थोड़ा चले है ॥ यहाँ से उलटे फिर हम
बड़ोदे आये यहाँ से रेल में बैठकर मील पचास
अहमदाबाद नगर में आये नगर बहुत बड़ा
है इस में तीन मन्दिर अरु दो चैत्याले हैं सो
महामनोज्ञ मूर्ति जी अति मनोहर हैं। अहम-
दाबाद से पचास मील बड़वाण का इष्टेशन है
इस से नजदीक बड़वाण शहर है ॥ इस शहर
में दिगम्बरी कोई भी नहीं है स्वेताम्बरियों के
मन्दिर हैं ॥ इस नगर से आगे गाड़ी भाड़े कर
के कोस साठ ६० श्री गिरनार जी गये इस मार्ग

में सड़क कहीं कच्ची कहीं पक्की तथा जल भी कहीं खारी कहीं मीठा है ॥ परन्तु किसी बात का डर नहीं है ॥ खानेपीने की सब चीज़ मिलती हैं श्री गिरनार जी से कोस दो झूनागढ़ नगर है यहाँ धर्म्मशाला है उस में हम ने विश्राम किया था ॥ मन्दिर जी एक दिगम्बर आमनाय का है उस से परे कोस दो गिरनार जी हैं इस पर्वत का कोस ६ की चढ़ाई है और कहीं कहीं पैड़ी भी हैं परन्तु चढ़ाई सुगम है। जहाँ श्री नेमनाथ जी का तप कल्याणक ज्ञान कल्याणक निर्वाण कल्याणक हैं ॥ अतिशय क्षेत्र है सहस्रा वन में तप कल्याणक हैं उपमा अपार है लिखने में नहीं आती है दरशन करके बड़ा आनन्द हुआ और जिस पर्वत से भगवान मोक्ष पधारे हैं वह बहुत ऊंचा है और महा मनोज्ञ है उपमा लिखी नहीं जाती है॥ इस पर्वत से बहत्तर करोड़ सात सौ सात ७२००००७०७ मुनि मोक्ष पधारे हैं॥ उस पर्वत की उपमा क्या

लिखिये दर्शन कर के बड़ा हर्ष प्राप्त हुवा ॥ इस पर्वत पर मन्दिर जी दो महा मनोहर हैं। तिन में मूर्त्ति अति मनोज्ञ हैं मन्दिर जी के नजदीक पर्वत की गुफा है इस गुफा में राजुल जी ने तपस्या करी है जहाँ राजुल जी की मूर्ति जी हैं दरशन कर के बड़ा आनन्द होता है ॥ श्री गिरनार जी की परिक्रमा चौदह कोस की है और गिरनार जी की चारों ओर महावन है ॥ तिन में से पवन के वेग कर उत्तम सुगन्ध आवैं हैं। यहाँ से गाड़ी में बैठ कर कोस पैंतालीस ४५ श्री सतुरंजै जी आये जहां से आठ कोड मुनि-मोक्ष पधारे हैं। सो पर्वत बहुत मनोज्ञ है एक मन्दिर जी दिगम्बर आमनाय का पर्वत के ऊपर है ॥ एक मन्दिर जी दिगम्बर आमनाय का न ० नगर में है। और मन्दिर ढाई हजार स्वेताम्बर आमनाय के हैं। तिन में द्रव्य अधिक लगा है जैन धर्म की चमत्कारी बहुत है पर्वत से कोस दोय नीचे पालीथाना नाम बड़ा भारी शहर है

यहाँ से गाड़ी में बैठ कर भाव नगर गये जहाँ मन्दिर जी दो दिगम्बर आमनाय के हैं ॥ मूर्ति जी बहुत मनोज्ञ चौथे काल की हैं। यहां से चल कर कोस छ घोघाबन्दर पहुंचे। यह नगर समुद्र के किनारे है ॥ इस में मन्दिर जी दिगम्बर आमनाय के हैं और एक सहस्र कूट चैत्याला हैं सो धातमई हैं ॥ मूर्ति जी महामनोज्ञ और पुराचीन हैं ॥ दरशन कर के बड़ा आनन्द हुवा ॥ इस जगह से नाव में बैठ कर सूरत नगर पहुंचे इस शहर का हाल पहिले कह चुके हैं। यहाँ से रेल में सवार होकर एक सौ सोलह मील बम्बई पहुंचे सो बम्बई का हाल भी पहिले लिखा गया है ॥ बम्बई से रेल में बैठ कर मील साठ पूना नगर गये इस नगर में मन्दिर जी दो दिगम्बर आमनाय के हैं। दर्शन कर परम हर्ष हुवा यहाँ से पचास मील कुलड़ा वाड़ी के इसटेशन पर पहुंचे रेल में बैठ कर गये थे ॥ इस इसटेशन से गाड़ा किराये कर के कोस

पैंतालीस श्री कुंथलगिरि पर्वत पर पहुंचे ॥ जहां से श्री देशभूषण कुलभूषण मुनि मोक्ष पधारे हैं ॥ इस पर्वत पर पाँच मन्दिर जी दिगम्बर आमनाय के हैं ॥ इन में मूर्तियों का समूह बहुत है मूर्तियां प्राचीन और महामनोज्ञ हैं ॥ रस्ता पहाड़ तथा कच्ची सड़क का है। मार्ग में जो जो ग्राम आवै हैं सो धाम धाम में चैत्याले हैं॥ दर्शन करते हुवे कुंथलगिरि से लौट कर फिर कुलड़ावाड़ी ष्टेशन पर पहुंचे। रेल में बैठ कर मील पच्चीस शोलांपुर नगर में पहुंचे तहां तीन मन्दिर दस चैत्याले के दरशन किये। इन मंदिर जी तथा चैत्यालों में मूर्ति महा मनोज्ञ और बड़ी बड़ी अवगाहाना की हैं एक मंदिर जी में मण्डल ढाई दीप का धातमई है सो महामनोज्ञ है। और डेढ़ सौ १५० मूर्ति धातमई मण्डल कि मंदिर में विराजमान हैं और इक्काकार नदियन कर संयुक्त हैं दरशन कर बड़ा आनन्द हुवा यहां से रेल में सवार हो कर मील पच्चत्तर

रायचूल नगर पहुंचे ॥ ये नगर प्राचीन है इस नगर में दो चैत्याले दिगम्बर आमनाय के हैं तिन में मूर्ति महामनोज्ञ चौथे काल की हैं । और एक मंदिर नया तैयार हो रहा है ॥ यहां से रेल में सवार हो कर मील दो सौ पचत्तर २७५ आरकून शहर पहुंचे आरकून से रेल में सवार हो कर मील एक सौ पच्चीस १२५ बिगलूर नगर में पहुंचे इस नगर में पदमन्ना नाम श्रावग के घर एक चैत्याला है यह नगर बहुत बड़ा है । बस्ती से तीन कोस पर छावनी अंग्रज़ी है इस नगर में पच्चीस घर श्रावग भाइन के हैं आगे रेल नहीं है यातें गाड़ी किराये कर कोस पिच्चासी ८५ श्री जैनबद्री जा पहुंचे इस देश में जैनबद्री का नाम श्रवण बिगलूर कहते हैं नगर का नाम जैनबद्री है ॥ नगर के निकट एक पर्वत है उस पर्वत पर मूर्ति एक श्री गोमट स्वामी महाराज की बावन गज ऊंची खड़े योग्य महामनोज्ञ अतिशयवान है जिस मूर्ति की छाया

नहीं पड़ै है और पक्षी आदि जीव भी नहीं बैठें हैं तथा किसी प्रकार तिर्यंचादिक भी नहीं बैठ सके है ॥ वर्षा ऋतु में काई आदि कभी नहीं लगै है ॥ और जब दर्शन करिये तब नवीन दीखें हैं इत्यादिक अतिशय कर युक्त हैं। जा पर्वत पर ये मूर्ति गोमट स्वामी की है उस पर्वत पर के मंदिर जी और हैं इस पर्वत के साम्हणे एक पर्वत और है उस पर सोलह मन्दिर जी हैं यहां से नगर नज़दीक है। नगर में सात मंदिर जी हैं। नगर के समीप एक तालाव है उस पर तीन मंदिर जी हैं सर्व मंदिरन में मूर्ति जी बड़ी बड़ी अवगाहना की चौबीसी युक्त महामनोज्ञ चौथे काल की हैं॥ इस नगर के वासी श्रावक जिन की ज़बानी ऐसा सुना जो दो सौ २०० वर्ष भये तब एक चामुण्ड नाम राजा हुवा है। उस राजा के जैन धर्म की सरधा थी ताकूं स्वप्न भयो है ता पाछे मूर्त्ति श्री गोमट स्वामी की प्रगट भई है। प्रथम इस प-

हाड़ में काहू को खबर नहीं थी सो ग्राम के बासी चौथे काल की बतावें थे मन्दिर के आगे मानस्तंभ तथा जैतथंभ ऊंचे ऊंचे बने हैं जिन पर चतुर्मुखी मूर्ति विराजमान हैं ॥ इस जैन बद्री नग्र में सर्वशास्त्र जी पुराचीन ताड़ पत्र पर करनाटकी अक्षरन में लिखे हुये मंदरन में विराजमान हैं। इस नगर में सौ घर श्रावकजैनी भाइन के हैं। पहले यहां राजा प्रजा दोनों जैनी थे। अब काल दोष कर राजा जैनी नहीं है ॥ जैन धर्म का प्रभाव वर्त्तमान है। इस जगह पर्वत के चारों ओर चंदन के वृक्ष हैं और सिद्धांत शास्त्र जी भी इस जगह हैं ॥ ये हाल ब्रह्मसूर पंडित की जबानी मालूम हुवा। इस पंडित को हम शोलापुर से नौकर कर के संग लेगये थे काहे तें जो जैन बद्री क्षेत्र की बोली हमारे क्षेत्र के आदमी समझ नहीं सकें हैं और हमारी बोली वे नहीं समझे हैं ब्रह्मसूर पंडित दोनों बोली समझै था ॥ सिद्धांत

शास्त्र नित्य प्रति पढ़े जांय हैं यह सर्व क्षेत्र महारमणीक हैं अतिशय युक्त हैं इस क्षेत्र से चित आयवे कूं नहीं था ॥ मारग में जो जो ग्राम आवत गये तिन में जो मंद्रि वा चैत्याले आवते गये तिन के दर्शन करते चलते गये मारग में वन बहुत हैं परबत बहुत हैं वन में एक एक वृक्ष असी असी हाथ ऊंचे हैं ॥ तथा काली मिरच छोटी इलायची दारचीनी आदिक के भी वृक्ष इस वन में हैं सो हमने अपनी आं-खों से सब देखे हैं परवतों की चढ़ाई बहुत है जैनवद्री से चल कर कोस एक सौ चार ॥ १०४ ॥ मिर्गुल गांव गये तहां का राजा जैनी है ॥ सो महा धर्मात्मा है इस राजा से मिल कर चित्त अति प्रसन्न हुआ इस नगर में दो मंद्रि जो हैं तिन में मूर्ति महामनोज्ञ चौथे काल की हैं ॥ दरशन कर कै अति आनंद हु-वा ॥ यहां से चल कर कोस नौ ॥ ९ ॥ धर्मस्थल नगर पहुंचे इस नगर का राजा बड़ा धर्मात्मा

मंजय नामी है सो जैनी है आये गये यात्री का आदर सत्कार बहुत करे है याकी उमर वर्ष पैंतालीस की है। इस नग्र में मंद्रिजी दो हैं। सो अति मनोहर हैं। यहां से चल कर कोस चौबीस रानूर नग्र है॥ ताके मारग विषै एक बिलतंगड़ी नाम ग्राम है। तामें तीन मंद्रिजी महा मनोज्ञ हैं तिन के दर्शन करे दूसरा गिरनारीग्राम तहां एक मंद्रि है तिस के दर्शन करे। फिर रानूर में पहुंचे॥ तहां एक मूर्ति पाखाण मई महा मनोज्ञ छब्बीस॥ २६॥ हाथ ऊंचा खड्गयोग श्री गोमट स्वामी महाराज की है॥ पहले इस नग्र का राजा जैनी था अब अमलदारी अंगरेज़ी है॥ श्रावकन के घर पहले इस नगर में एक हज़ार थे समय के प्रभाव से दस घर रह गये पहली कितने श्रावक कोडपती थे अब कोई भी न रहा। अब इस नगर में आठ मन्द्रि जी मानस्थंभ संयुक्त हैं सो अमोलक हैं। मूर्ति बड़ी बड़ी अवगाहना की महा म-

नोज्ञ अतिशयवान चौबीसी कर युक्त विराज-
मान हैं ॥ श्री गोमट स्वामी जी की मूर्ति परवत
ऊपर उद्यान में अतिशय युक्त महामनोज्ञता सों
बिराजै है। ताके दरशन कर बड़ा आनंद हुवा
यहां से चल के मारग में फिरोज ग्राम विषै
मंदिर दो हैं तिनके दर्शन किये इन के प्रति विं-
बन की महिमा अपार है हमने मारग चलता
दरशन किये तातैं सर्व महिमा नहीं लिख सकैं
यहां से चल कर अर्थात् रानूर से चल कर कोस
बारह मूलबद्री पहुंचे तहां अठारह मंदिर जी हैं
तिन में एक मंदिरजी राजा नें सात किरोड़ रु-
पये लागत लगा कर बनाया है। इस मंदिरजी
में धातु पाषाण मई ढाई हजार मूर्ति महाम-
नोज्ञ बड़ी बड़ी अवगाहना की हैं अतिशय युक्त
बिराजमान हैं ॥ और श्री मंदिरजी के तीन कोट
हैं ॥ बाईस खण भीतर जाय कर दर्शन होते
हैं ॥ और मंदिरजी तीन मंजिल ऊंचा है तीनों
मंजिलों में भगवान के प्रतिबिंब बिराजमान

हैं ॥ इसमंदिर्जी में एक मूर्ति श्री चंद्राप्रभू स्वामी की स्वर्णमई है। ये पांच हाथ ऊंची खड़े योग महामनोग्य है॥ हमने प्रक्षाल और पूजन करी ताकरि अति आनंद हुआ इन सबरी अपार महिमा है॥ इस मंदिर्जी में एक सहस्त्र कूट चैत्याला हैं॥ सो एक गज लम्बा एक गज चौड़ा ढाई गज ऊंचा स्वर्णमई है॥ तामें एक हजार अरु आठ मूर्ति हैं यह ढला हुआ है॥ याकूं जब चाहो उठाय कर कहीं विराजमान कर दो तोल में दस मण के उनमान है॥ इस मंदिर्जी में दो पाषाण की प्रतिमा हैं उन में पाषण अमोलक लगा है। ऐसी हमनें और कहीं देखो नहीं॥ फटिक मई छोटी बड़ी मूर्तिजी उन्मान पांच से हैं॥ दूसरे मंदिर्जी में प्रतिमाजी एक सात हाथ ऊंची खड़े योग पाषाण मई श्री पार्श्वनाथ भगवान की है॥ और भी प्रतिबिंब-धात मई और पाषाण की चौवीसी युक्त या मंदिर्जी में बहुत हैं॥ और एक चैत्याला

नंदीश्वर द्वीप का धात मई पहिले मंदिर की चैत्याले के समान लम्बा चौड़ा इस मंदिर में है सो ऐसा सोहै है मानूं नंदीश्वर द्वीप ही विराजमान है ॥ दर्शन कर बड़ा आनंद प्राप्त हुआ ॥ इन मंदिरन में ॥ हीरा ॥ पन्ना ॥ नीलम ॥ पुषराज ॥ गोमेदक ॥ मूंगा ॥ माणक ॥ गरुड़मणि इत्यादिक रतनन की सर्व प्रतिमाजी चौवीस हैं तिन की महिमा लिखने में नहीं आवती है ॥ दर्शन कर बड़ा हर्ष हुवा है ॥ और ताड़ पत्र पर लिखे हुए तीन शास्त्र जी सिद्धांत जिन के पत्र चौड़े अंगुल चार लंबे चौदह गिरह हैं । नाम शास्त्रन के ये हैं ॥ श्री जैधवली जी ॥ श्री महाधवल जी ॥ श्री विजैधवल जी ॥ इन शास्त्र तथा प्रतिमां जी के दरशन बड़ी कठिनताई से होंय हैं ॥ जब वहां के बासी यात्रीन कूं भलो भांति निष्कपट चित्त में निश्चय कर लेवे हैं ॥ तब दर्शन करावें हैं ॥ मन्दिरन के अधिपति तीन श्रावक मुकर्रर हैं ॥ एक एक ताली तीनों के पास रहे

है ॥ अब कोउ दरशन किया चाहै यह भेले होय भली भांति श्रावक की परीक्षा कर दर्शन करावैं हैं ॥ इन मन्द्रिन में (वादित्र) ऐसे बाजे हैं मानूं दुंदुभी शब्द होय है ॥ और पूजन इन मन्द्रिन में त्रिकाल होय है। पहिले इस नगर का राजा जैनी था उस का परलोक हो गया एक पुत्र उस का ग्यारह वर्ष की उमर का है ॥ उस के खान पान की खबर सरकार अंग्रेजी से होती है और उस के राज्य का बन्दोबस्त सरकार करै है ॥ इन मूलवद्री जी में पहिले बारह सौ घर जैनियों के थे। अब समय के प्रभाव तीस घर बच रहे हैं क्षेत्र महा रमणीक है प्रशंसा कहां लौं करिये ॥ बाकी जो सोलह मन्द्रि हैं तिन में प्रतिमा जी हजारों बड़ी बड़ी अवगाहना की धातु पाषाण मई हैं ॥ पूजन त्रिकाल होय है॥ यहां से चल कर कोस नौ ६ कारकुल नगर पहुंचे इस नगर में चौदह मन्द्रि जी हैं और प्रतिमा जी एक श्री गोमट स्वामी जी की पर्वत

ऊपर विराजमान है॥ इस प्रतिमा जी के चारों तरफ मन्दिर जी के मकान बने हैं॥ यह प्रतिमा जी बत्तीस हाथ ऊंचा है सो महामनोज्ञ अतिशयवान है॥ दर्शन कर के परम हर्ष होय है। और ये चौदह मन्दिर जी राजा के बनाये हुये हैं॥ जिस पर्वत पर श्री गोमट स्वामी विराजमान हैं उस पर्वत के सामने एक और पर्वत है। उस पर एक मन्दिर जी अद्भुत रचना का है जैसा कहीं देखने में नहीं आया इस मन्दिर जी में महामनोज्ञ अतिशयवान तीन तीन प्रतिमा जी स्याम वर्ण खड़े योग चारों ओर विराजमान हैं और मन्दिर जी एक तालाव के ऊपर है सो तालाव पर्वत के नीचे है और बारह मन्दिर जी नगर में हैं। सो बड़ी बड़ी लागत की हैं॥ इन मन्दिरन का खर्च सर्कार अङ्गरेज़ी से मिले है॥ राजा इस नगर का भी पहिले जैनी था जैनी लोग पहिले इस नगर में बहुत थे अब समय के प्रभाव तीन घर रह गये हैं॥ हम वहां से चल

कर कोस चार मद्रापट्टन एक गांव है तहां गये इस नगर में एक मन्दिर जो अधिक लागत को है इस में प्रतिमा जी का समूह बहुत है यह प्रतिमा जी चौथे काल कीसी हैं महामनोज्ञ अतिशयवान हैं ॥ यहां से तीन कोस दूरवरतूबर नाम एक नगर है ॥ इस में दो मन्दिर हैं महेन्द्र नाम राजा राज करै है सो बड़ा धर्मात्मा है इस गांव में गाड़ी नहीं जा सकी रस्ता झाड़ी पहाड़ का है इस कारण गये नहीं ॥ ये हाल जबानी मद्रापट्टन के वासियों के सुना है यहां से कोस अठारह वारंग नाम नगर में गये तब एक कोस तलक पानी देखा बीच में मन्दिर जी हैं सो पानी अथाह है ॥ हम नाव में बैठ कर दर्शन करने गये थे ॥ ये मन्दिर जी महामनोज्ञ हैं और प्रतिमा जी चारों तरफ चार स्यामा वर्ण खड़े योगसहा मनोहरता सहित विराजमान हैं ॥ तथा और प्रतिमा जी भी हैं दरशन कर बड़ा आनन्द हुवा ॥ मन्दिर जी दो तालाब

के किनारे पर हैं तिन में प्रतिमा जी का समूह बहुत है। धात पाषाण की सब मूर्त्ति जी चौथे काल की हैं॥ इस मार्ग में पर्वत झाड़ी बहुत हैं लेकिन मार्ग बने हैं सड़क पक्की है॥ वारंग नगर से चल कर कोस तिरपन एडुली नगर में पहुंचे जहां मन्दिर जी तीन बड़ी लागत के हैं तिन में मूर्त्ति जी महामनोज्ञ प्राचीन चौथे काल की हैं॥ इन मन्दिर का खर्च सरकार अङ्गरेजी से मिले है दर्शन कर अति आनन्द हुआ॥ यहां से आगे चल कर कोस पिच्चावें दुरगी नामा शहर है राह में झाड़ी बन पर्वत अधिक आवें हैं॥ परन्तु सड़क बन रही है इस शहर में जैन मन्दिर नहीं हैं॥ लेकिन दुकान दश मारवाड़ियों की हैं सो श्रावक ओसवाल हैं॥ वहां से चल कर कोश चौरासी बिलाहरी नग्र पहुंचे॥ ये नग्र बहुत बड़ा है इस में जिन मंदिर नहीं है यहां से रेल में सवार हो कर मील एक सौ दश राय-चूल नग्र पहुंचे। यहां से रेल में सवार हो कर

कोस अस्सी अथवा मील एक सौ बीस सोलां-
पुर पहुंचे तहां से मील एक सौ तीस पूने आये,
पूने से साठ ॥ ६० ॥ मील बम्बई आये ॥ ब-
म्बई से मील सौ नासक आये यहां एक मंद्रि
जी दिगंबर आमनाय का है स्वेताम्बरियों के
बहुत हैं ॥ इस का हाल पहले भी लिखा है ।
गजपंथ जी यहां से दोय कोस हैं ॥ नासक से
रेल में बैठ कर मील सौ भुसावर से मील
साठ खड़वा शहर आये यहां एक मंद्रि जी हैं
तिन के दरशन करे यहां से रेल में बैठ कर
मील पचास हरदे शहर आये यहां भी एक
मंद्रि है तिस के दर्शन करे फिर रेल में बैठ
कर उनमान डेढ़ सौ मील के झब्बलपुर आ-
ये यहां से चल कर मील एक सौ सत्तर प्रयाग
आये जिस कूं इलाहाबाद भी कहते हैं ॥ यह
नगर बड़ा पुराना है जिस में उन्मान ८००००
मनुष्य रहते हैं गंगा और यमुना दोनों का इ-
स. स्थान पर सङ्गम हुआ है हिन्दुओं का तीर्थ

है, त्रिवेणी इसी तीर्थ का नाम है मकर की संक्रांत पर बड़ा भारी मेला होता है, लाखों यात्री लोग आते हैं किला भी लाल पत्थर का बना है जिस में तोपखाना मेगज़ीन रहता है, इस में एक गुफा है उस गुफा में एक बटवृक्ष है जिस्को लोग अक्षयवट कहते हैं, बहुधा मूर्ख ऐसा कहते हैं कि भगवान ऋषभदेव ने यहां तप किया है, हम दर्शन कर दिल्ली आये इस इंद्रप्रस्थ नगर में २८ मंदिर शुद्ध आमनाय जैन-धर्म्म के हैं जिन में २७ दिगम्बरी और एक स्वे· ताम्बरी है यह नगर तो प्रसिद्ध ही है, यहां से हम मील ३२ फर्रुखनगर पहुंचे जो जो भाई फ़र्रुखनगर के थे उन को निज स्थान पहुंचाय बाबा जी महाशय देशांतर गमन कर गये यह यात्रा मिती मार्गशीर्ष शुक्ला ६ सं १६३२ से आरंभ हो कर ज्येष्ठ सम्बत् १६३३ में सम्पूर्ण हुई जिस की सम्पूर्ण समाचार जैनी लोगों की प्रेरणानुसार मुन्शी जीयालाल ने दिल्ली में नारायणदास के छापे

में उसी समय छपाय दिये थे अब अनेक मनुष्यों की इच्छानुसार और निम्न लिखित पत्रानुसार दूसरी बार छपवाया जाता है, द० जीयालाल ॥

पत्र।

मेरे धर्मस्नेही मित्र जीयालाल जी,

जैनबद्री मूलबद्री की यात्रा का समाचार पुन: छपवाइये बहुधा जैनी भाई दर्शनाभिलाषी हैं।

द: सुखदेव

श्रील श्रीयुत चौधरी मुंशी पण्डित जैनी जीयालाल जी महाशय अनेकानेक प्रणाम,

आपने जो जैनबद्री मूलबद्री क्षेत्र की यात्रा के समाचार सम्वत् १९३३ में मुद्रित कराय प्रचार किये थे वे अत्यन्त ही प्रशंसा योग्य हैं परंतु खेद का विषय है कि अब उनका मिलना ही दुर्लभ हो गया क्योंकि जितने पुस्तक छपे थे सब आप के पास से देशांतर में चले गये अब ऐसे पुस्तकों की वास्तव में जैनी मनुष्यों को

परम आवश्यकता है यदि आप उस के पुनः मुद्रित कराने का यत्न करें तो क्या ही उत्तम बात हो मैंने केवल अपने मन से ही नहीं किंतु बहुधा जैनी महाशयों की प्रार्थनानुसार आप से सविनय निवेदन किया है सो आशा है आप प्रमाण करेंगे ज्यादा शुभ ।

आप का मित्र
गुरदयाल सिंह गुप्त जैनी
कानपुर ।

मैंने यह पुस्तक केवल जैनी लोगों के लाभार्थ छपवाई है

द: जीयालाल सं॰ जै॰

—***—

विज्ञापन

"जैनप्रकाश" यह हिन्दी भाषा का पाक्षिक पत्र जिस में केवल जैनी गणों की उन्नति का ही प्रबन्ध किया गया है और शीघ्रही इस की छपाई का प्रबन्ध भी टाइप के यंत्र में होगा हम

अधिक प्रशंसा नहीं करते देखने से समस्त शोभा प्रकाश होगी मूल्य डाकव्यय सहित केवल २।≠) वार्षिक रक्खा है नमूने के दाम ≠) जिस को लेना हो मुझे लिखें।

चौधरी जीयालाल संपादक जैनप्रकाश
(फ़र्रुखनगर) ज़िला गुड़गांवा।

—***—